विनोबा कथावली

■ वर्ष : द्वितीय ■ अंक : 3 ■ अक्टूबर 2025

किस्सा बैक बेंचर्स का

इन बैक बेंचर्स के जीवन में शिक्षक श्री विशाल झाडे की एंट्री ऐसी हुई जैसे 'तारे ज़मीन पर' फ़िल्म में रामशंकर निकुंभ की

घाटकिन्ही तांडा (यवतमाल): हर क्लास में एक गैंग होती है - पीछे वाली बेंच पर... जिसे हम 'बैक बेंचर्स' कहते हैं। ये वो लोग हैं जो न तो टीचर की नज़र में आते हैं, न ही सवालों के जवाब देने में। इन्हें अक्सर शरारती, सुस्त या पढ़ाई में कमज़ोर समझा जाता है। ज़िला यवतमाल के दारव्हा तालुका मे एक छोटे से गाँव, घाटकिन्ही तांडा के प्राथमिक विद्यालय में भी एक ऐसा ही गैंग था, और इस गैंग के हीरो थे यश राम राठौड़।

पहली कक्षा में, यश के लिए स्कूल किसी सज़ा से कम नहीं था। बेंच का वो आखिरी कोना उसे इतना गंदा और डरावना लगता था कि वह अक्सर स्कूल से भागने के बहाने ढूंढता। पढ़ाई कुछ समझ नहीं आती थी और टीचर की डांट-फटकार रोज़ की बात थी। यश अकेला नहीं था। उसकी तरह, मानवी सुनील जाधव और शिवनंदन श्याम चव्हाण जैसे कुछ और बच्चे भी 'नॉन-परफ़ॉर्मर' का ठप्पा लेकर धीरे-धीरे कक्षा से दूर होते चले गए।

सरकारी नियमों के चलते ये सभी बच्चे छठी कक्षा तक पहुँच तो गए, पर मन में पढ़ाई के प्रति डर भर गया था और सीखने की इच्छा खत्म हो चुकी थी। तभी, उनकी ज़िंदगी में विज्ञान और गणित के शिक्षक श्री विशाल झाडे की एंट्री हुई। विशाल जी को तुरंत समझ आ गया कि ये बच्चे बाकियों से कम नहीं हैं, बस इन्हें सही दिशा नहीं मिली।

उन्होंने 'तारे ज़मीन पर' फ़िल्म के शिक्षक की तरह, इन बच्चों से दोस्ती की और जाना कि सीखने की ललक तो इनमें भी है।

विशाल जी ने एक सरल तरकीब निकाली। उन्होंने कक्षा की पुरानी कतार में रखे गए बेंचों की व्यवस्था को तोड़कर उन्हें गोलाकार लगवाया, ताकि कोई भी बच्चा 'बैक बेंचर' न रहे। अब हर बच्चा शिक्षक के नज़दीक था, हर कोई एक-दूसरे से बात कर सकता था और सवाल पूछ सकता था।

यह छोटासा बदलाव जादू की तरह काम कर गया। मानवी की आँखें खुशी से चमक उठती है, जब वह कहती है, "जब से विशाल सर आए हैं और हम आगे बैठना सीख गए हैं, हर विषय में मज़ा आने लगा है। अब हमें विषय समझ भी आता है।" यश कहता है, "छठी कक्षा में आकर ऐसा लगा, जैसे अब हमें भी सीखने का मौका मिल रहा है।"

गाँव के माता-पिता भी इस बदलाव से आश्चर्यचकित हैं। एक पिता कहते हैं, "मेरा बेटा तो पहले स्कूल न जाने के बहाने ढूंढ़ता था, अब वह रोज़ ख़ुशी-ख़ुशी स्कूल जाता है।"

एक माँ की आँखें भर आईं, "इस बदलाव ने हमारे बच्चों का भविष्य बदल दिया। बच्चों में बहुत आत्मविश्वास आ गया है।"

विशाल जी बताते हैं कि इस बदलाव में Vinoba App ने उनकी बहुत मदद की। वे कहते हैं, "ऐप पर होने वाली स्पेलिंग बी प्रतियोगिता और बच्चों का प्रदर्शन दिखाने वाला प्लेटफ़ॉर्म, मेरे लिए वरदान साबित हुआ। इसने बच्चों को और ज़्यादा मेहनत करने के लिए प्रेरित किया।"

विशाल जी का मानना है, "हमें हर बच्चे को मुख्य धारा में लाने के लिए सब कुछ करना चाहिए, नहीं तो सरकारी स्कूल, जो प्राइवेट स्कूलों से भी बेहतर शिक्षा दे सकते हैं, बंद हो जाएँगे। मैं ऐसा नहीं होने दूँगा।"

आज, इस कहानी का सबसे ख़ूबसूरत मोड है। बैक बेंचर्स के अधिगम उपलब्धि में जबरदस्त सुधार। वही यश जो कभी स्कूल से भागता था, अब सुबह सबसे पहले तैयार होकर निकलता है। वह अपने साथीयों को बुलाता है, और उन्हें साथ लेकर स्कूल जाता है। उनकी आँखों में अब डर नहीं, बल्कि सीखने और आगे बढ़ने का जोश है। ■

अब की बार, हर बच्चा 60% पार

जब हमने देखा कि नीति आयोग के सूचकांकों में '60% से ऊपर स्कोर करने वाली लड़कियों की संख्या' एक अहम सूचकांक है, तब हमने निर्णय लिया कि पूरे जिले को इस स्तर तक पहुंचाना है। हमने ठान लिया है कि 60% को ही पासींग स्कोर मानना है। यही सोच हमें नई दिशा देगी।

पेज 2

विनोबा ऐप के संग...

यह सिर्फ़ एक मोबाइल ऐप नहीं था, बल्कि एक शिक्षक के लिए एक साथी, एक मंच, एक खिड़की बन गया। संगीता जी को पहली बार यह अनुभव हुआ कि वे अकेली नहीं हैं। इस ऐप के ज़रिए वे न जाने कितने शिक्षकों से जुड़ गईं, जिनसे सीखना और बाँटना दोनों शुरू हुआ।

OLF TESTIMONIAL

पेज 7

अब की बार, हर बच्चा 60% पार

बस्तर जिला प्रशासन का महत्वाकांक्षी प्रयास

बस्तर अक्सर पिछड़ेपन के नजरिए से देखा जाता है, लेकिन जिला मिशन समन्वयक (DMC) श्री अखिलेश मिश्रा इस धारणा को बदलना चाहते हैं। वे बताते हैं कि यह जिला नक्सलमुक्त है, यहां के लोग शिक्षित हैं और सीखने के लिए तैयार भी। बस्तर की अपनी समृद्ध संस्कृति है, जिसकी विशेषताओं को समझे बिना केवल कमियों की बात करना सही नहीं होगा।

अखिलेश जी खुद बचपन से यहीं पढ़े और बढ़े हैं। जनवरी 2022 से यहाँ DMC के रूप में कार्यरत हैं। उनके जिम्मे 1,31,000 से अधिक सरकारी स्कूलों के बच्चे हैं, जिनमें 35,000 हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी के विद्यार्थी शामिल हैं। वे मानते हैं कि आज सबसे बड़ी चुनौती यही है कि बस्तर के बच्चे बहुत ज़्यादा अंक हासिल नहीं कर पाते।

जब आप इस जिम्मेदारी में आए, आपको सबसे ज़्यादा कौन सी कमी खटकी?

मैंने देखा कि हमारे बच्चे मेहनती हैं लेकिन उच्च प्रतिशत तक नहीं पहुंच पा रहे। इसका सबसे बड़ा कारण है, हमने कभी लक्ष्य ही तय नहीं किए। बच्चों का पास हो जाना ही सफलता मान लिया जाता था। पहले के समय में 60% बहुत ऊंचे अंक माने जाते थे, लेकिन आज प्रतियोगिता 98–99% तक पहुंच गई है। इस अंतर को पाटना हमारी सबसे बड़ी चुनौति है।

जिले में 'मिशन 200' की शुरुवात हुई है। उसके बारे में क्या बताना चाहेंगे?

मिशन 200 के तहत हम 10वीं और 12वीं के 200 संभावित छात्रों को चिन्हित करने की प्रक्रिया में हैं, जिनमें मेरिट लिस्ट में आने की क्षमता है। जुलाई से ही उनकी नियमित मॉनिटरिंग हो रही है। मासिक टेस्ट, क्वेश्चन बैंक और आंसर बैंक बनाकर बच्चों की लिखने की आदत मजबूत हो रही है। नवंबर तक उनकी प्रगति स्पष्ट होगी और जो लगातार अच्छा करेंगे, उनके लिए विशेष टेस्ट सीरीज़ चलाई जाएगी ताकि वे राज्य स्तरीय मेरिट में आ सकें।

जिला कलेक्टर के सुझाव से यही मासिक टेस्ट, क्वेश्चन बैंक और आंसर बैंक 1ली से 12वी के सभी बच्चों के लिए लागू की गई है, ताकि बच्चें 8 वी कक्षा में आते आते पूरे तैयार हो जाए। शुरू में कुछ शिक्षक इसे अपनाने में असहज थे। पहले पहले 90% स्कूलों के बच्चे 60% से कम ही अंक पाते थे। शिक्षकों की ईमानदारी यह रही कि उन्होंने सही नतीजे बताए। इसी पारदर्शिता पर भरोसा करके हम आगे बढ़ रहे हैं। अब धीरे-धीरे यह आदत बनती जा रही है।

श्री अखिलेश मिश्रा
जिला मिशन समन्वयक (DMC), बस्तर

आपने क्या लक्ष्य निर्धारित किया है?

विगत वर्षों में बस्तर से कोई भी छात्र बोर्ड परीक्षाओं की वरीयता सूची में स्थान नहीं बना पाया था, किंतु अब हमारी स्थिति कहीं बेहतर है। हमारा प्रयास है कि आने वाले समय में बस्तर के बच्चों का वरीयता सूची में आना एक सामान्य बात बन जाए। प्रत्येक छात्र उस स्तर तक पहुँचने की कोशिश करे और उत्कृष्ट प्रदर्शन उनकी आदत बन जाए—यही हमारा अगला लक्ष्य है।

हमारा फोकस है—हर बच्चा न्यूनतम 60% अंक हासिल करे। कलेक्टर श्री हरीश एस (IAS) और जिला पंचायत CEO श्री प्रतीक जैन (IAS) भी यही विजन साझा करते हैं। दोनों की शिक्षा के प्रति रुचि और दूरदृष्टि के कारण, उनके मार्गदर्शन में हम यह कार्य आगे बढ़ा रहा है।

जब हमने देखा कि नीति आयोग के सूचकांकों (indicators) में 60% से ऊपर स्कोर करने वाली लड़कियों की संख्या एक अहम सूचकांक है, तब हमने निर्णय लिया कि पूरे जिले को इस स्तर तक पहुंचाना है। हमारे पास समर्पित शिक्षक हैं, जो बदलाव के लिए तैयार हैं। शिक्षक और प्रशासन मिलकर मेहनत कर रहे हैं कि बस्तर भी टॉप रैंकिंग में दिखे। हमने भी ठान लिया है कि 60% को ही पासींग स्कोर मानना है। यही सोच हमें नई दिशा देगी।

इस प्रक्रिया में सबसे बड़ी चुनौतियाँ क्या हैं?

तीन मुख्य चुनौतियां हैं—

1. कुछ शिक्षक नई पद्धति अपनाने में समय लेते हैं।
2. विद्यार्थियों की निरंतर उपस्थिति ज़रूरी है, बीच-बीच में ट्रांसफर या अनुपस्थिति से पढ़ाई टूटती है।
3. छुट्टियां और अन्य सरकारी कार्य भी पढ़ाई में अवरोध उत्पन्न करते हैं।

फिर भी हमें भरोसा है कि धीरे-धीरे सब इसे स्वीकार करेंगे और सफल होंगे।

शैक्षणिक वर्ष के अंत में 'मिशन 200' से आपको क्या नतीजा अपेक्षित है ?

हम चाहते हैं कि इस साल 200 बच्चे 90% से अधिक अंक लाएं और राज्य की मेरिट लिस्ट में बस्तर अपना स्थान बनाएँ। अगर ऐसा होता है तो यह पूरे जिले के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि होगी।

क्या कोई अन्य पहल भी चल रही हैं?

जी हाँ, हमने संध्याकालीन कक्षाओं की शुरुआत की है। जिले में लगभग 250 जगहों पर छोटे-छोटे बैच बनाकर बच्चे शाम को पढ़ाई करते हैं। इसमें शिक्षक, युवा स्वयंसेवक और कॉलेज स्टूडेंट्स भी सहयोग कर रहे हैं। बच्चों को कहानियां सुनाना, भाषा सुधारना और गणित जैसी मूलभूत क्षमताओं को मज़बूत करना इस पहल का उद्देश्य है। इससे बच्चों में स्वप्रेरणा से पढ़ने की आदत विकसित हो रही है।

इस यात्रा में किन किन का सहयोग रहा?

सबसे बड़ा योगदान हमारे जिला प्रशासन और शिक्षकों का है। साथ ही, विनोबा ऐप ने हमारे काम को बहुत आसान बना दिया है—मॉनिटरिंग सरल हुई है और शिक्षकों में सकारात्मक प्रतिस्पर्धा बढ़ी है। इसके लिए मैं विनोबा टीम का विशेष धन्यवाद करता हूँ।

स्पष्ट लक्ष्य, पारदर्शी व्यवस्था और सामूहिक प्रयास—इन्हीं तीन स्तंभों पर खड़ा है 'मिशन 200'। अखिलेश जी का विश्वास है कि आने वाले वर्षों में बस्तर न केवल पुरानी छवि से बाहर निकलेगा, बल्कि शिक्षा और विकास की नई पहचान बनेगा। बस्तर अपनी उपलब्धियों से छत्तीसगढ़ के अग्रणी जिलों में शामिल होगा और पूरे देश के लिए प्रेरणा का उदाहरण पेश करेगा। ■

भण्डारा: जिला शिक्षा अधिकारी रवींद्र सोनटक्के और शिक्षण सभापति नरेश ईश्वरकर सहित अन्य अधिकारियों ने शिक्षकों को POM, साथ ही 'किलबिल मुक्त मंच', 'बोलेगा बचपन', और 'स्पोकन इंग्लिश' में उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया।

हिंगोली: जिला स्तरीय पुरस्कार समारोह में पालकमंत्री नरहरि जिरवाल, राज्यमंत्री हेमंत पाटिल और कलेक्टर राहुल गुप्ता ने शिक्षकों को POM और अन्य उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया। यहाँ विधान परिषद सदस्य और कई वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।

वर्धा: जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) पराग सोमन और जिला शिक्षा अधिकारी महेंद्र गजभिये ने शिक्षकों को जिला स्तरीय POM पुरस्कारों से सम्मानित किया। इस अवसर पर टीम विनोबा के सदस्य भी मौजूद थे।

यवतमाल: जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) अमित रंजन और शिक्षा अधिकारी प्रकाश मिश्रा ने 5 शिक्षकों को POM पुरस्कार से सम्मानित किया। एक शिक्षक को 'स्पेलिंग बी' में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया।

दुर्ग: जिला शिक्षा अधिकारी अरविंद मिश्रा और DMC सुरेंद्र पांडेय द्वारा 5 शिक्षकों को जिला स्तरीय और 2 शिक्षकों को ब्लॉक स्तरीय POM पुरस्कार तथा एक शिक्षक को 'बोलेगा बचपन' में उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया।

जांजगीर-चांपा: जिला शिक्षा अधिकारी राजकुमार तिवारी और APC प्रदीप कुमार मिश्रा ने कुल 10 शिक्षकों को POM पुरस्कार से, दो को 'बोलेगा बचपन', तीन को 'टॉप क्लस्टर हेड' और एक शिक्षक को 'लाइब्रेरी बैग' पुरस्कार से सम्मानित किया।

धमतरी: जिला शिक्षा अधिकारी अभय जयसवाल और APC एन.के. साहू ने 9 शिक्षकों को POM, 'बोलेगा बचपन', 'क्रिएटिव राइटिंग' और 'लाइफ स्किल प्रोग्राम' में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया।

सुकमा: छिंदगढ़ सहायक खंड शिक्षा अधिकारी (ABEO) चंद्रशेखर सोरी और APC राजेश सोनकर ने 3 शिक्षकों को POM पुरस्कार और एक शिक्षक को 'लाइब्रेरी बैग' पुरस्कार से सम्मानित किया। इस अवसर पर OLF के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे।

कूट प्रश्न 14 का उत्तर

1. HACET ->TEACH
2. NERAL ->LEARN
3. CLSSROMAO ->CLASSROOM
4. PLIUP ->PUPIL
5. NOITSAVON ->INNOVATION

सोमठाणा की युवा क्रांति

सोमठाणा (बुलढाणा) : कभी-कभी उम्मीद बड़ी सरकारी योजनाओं में नहीं, बल्कि गाँव के युवाओं के सामूहिक साहस में मिलती है। यह कहानी बुलढाणा जिले के लोणार ब्लॉक के सोमठाणा गाँव की है, जहाँ कुछ नौजवानों ने अपने गाँव के स्कूल को गुमनामी में खोने देने से इन्कार कर दिया। एक साल पहले तक, जिला परिषद मराठी प्राथमिक शाला पर संकट के बादल मंडरा रहे थे। जिन गलियारों में कभी 125 बच्चों की चहल-पहल थी, वहाँ अब सिर्फ 39 बच्चे रह गए थे। स्कूल के बंद होने का डर सिर्फ शिक्षकों को ही नहीं, बल्कि गाँव के हर जागरूक व्यक्ति को था।

तभी, सोमठाणा के युवाओं ने शिक्षकों के मार्गदर्शन में कुछ अलग करने का फैसला किया। वे जानते थे कि "शिक्षा जरूरी है" जैसे पुराने तर्क काम नहीं करेंगे।

हेडमास्टर रोहिदास गिराम बताते हैं, " हमने युवाओं को यह कहकर प्रेरित किया कि अब सिर्फ जागरूकता की नहीं, कार्रवाई की जरूरत है।" युवा इस चुनौती को स्वीकार करते हुए आगे आए। उन्होंने माता-पिता से बात की। उन्होंने कहा, "आप प्राइवेट स्कूलों में सालाना 30,000 से 60,000 रुपये खर्च कर रहे हैं, जहाँ न तो बच्चों की कोई खास तरक्की हो रही है और न ही वे अपनी जड़ों से जुड़े रह पा रहे हैं। हम चाहते हैं कि आप समझदारी से फैसला लें।"

उन्होंने न सिर्फ बच्चों को गाँव के स्कूल में वापस लाने में सफलता हासिल की, बल्कि कई मामलों में तो प्राइवेट स्कूलों से ली गई फीस भी वापस दिलवाई। इसी पैसे का उपयोग बच्चों की जरूरतों को पूरा करने में किया गया—किसी के लिए स्टेशनरी, तो किसी के लिए यूनिफॉर्म।

शिक्षिका रंजना चांखोरे कहती हैं, "जब माता-पिता ने देखा कि जितना पैसा उन्होंने प्राइवेट स्कूलों में खर्च किया, उतनी प्रगति नहीं दिखी, तब वे फिर से गाँव के स्कूल की ओर लौटे।"

'विनोबा शिक्षक सहायक कार्यक्रम' के तहत महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ की ऐसी कई सरकारी स्कूलों और शिक्षकों को तकनीक और व्यवहारिक विज्ञान की मदद से बच्चों में कहानी सुनाने, अंग्रेजी बोलने, कविता पाठ और अन्य जीवन कौशल विकसित करने के लिए प्रेरित करती है और सहायता भी दे रही है। OLF का 'विनोबा ऐप' शिक्षकों के शिक्षा विभाग से संबंधित दैनिक कार्यों को आसान और प्रभावी बनाने में मदद करता है।

आज, स्कूल में फिर से 125 बच्चे हैं, और यह संख्या लगातार बढ़ रही है। लेकिन सबसे बड़ा बदलाव सोच में आया है। गाँव के युवा अब सिर्फ बेरोजगारी या पलायन की बात नहीं करते, बल्कि अपनी शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने में भागीदार बन चुके हैं। सोमठाणा की जिला परिषद शाला अब सिर्फ एक सरकारी स्कूल नहीं, बल्कि पूरे गाँव के गौरव का प्रतीक बन चुकी है। यह कहानी इस बात का प्रमाण है कि सच्चा बदलाव ऊपर से नहीं, बल्कि युवा पीढ़ी के अटूट इरादों और सामूहिक प्रयासों से आता है।

सारे जन्मदिन अब बच्चों के नाम

चिंभर (वाशिम) : कुछ उत्सव ऐसे होते हैं जो घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर एक नई ऊर्जा पा लेते हैं। महाराष्ट्र के वाशिम जिले के चिंभर गाँव में, एक सरकारी मराठी स्कूल ने 'बच्चों के साथ जन्मदिन' की एक नई परंपरा शुरू की। अब, गाँव के प्रतिष्ठित लोग अपने जन्मदिन का जश्न स्कूल के बच्चों के साथ मनाते हैं। वे बच्चों के लिए मिठाई और उपहार लाते हैं, उनके साथ समय बिताते हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात—उनके साथ दिल से बातें करते हैं।

इस पहल के पीछे की सोच साझा करते हुए एक शिक्षक ने टीम विनोबा को बताया, "हमने सोचा कि जन्मदिन को सिर्फ केक काटने और पार्टी तक ही क्यों सीमित रखा जाए? क्यों न इसे बच्चों के लिए प्रेरणा और आनंद का अवसर बनाया जाए?" शुरुआत में इस पहल को लागू करने में थोड़ी हिचकिचाहट थी लेकिन जब गाँव के प्रगतिशील किसान श्री शंकरराव पाटील सानप ने अपना जन्मदिन स्कूल में मनाने का फैसला किया, तो यह हिचकिचाहट दूर हो गई। वे मिठाई लेकर आए, बच्चों को स्टेशनरी भेंट की और हर बच्चे से व्यक्तिगत रूप से बात की। एक अन्य शिक्षक ने मुस्कुराते हुए कहा, "बच्चों के चेहरों पर जो मुस्कान थी, वो अनमोल थी। हमें एहसास हुआ कि हमारा थोड़ा-सा अपनापन इन नन्हें बच्चों के लिए कितनी बड़ी खुशी बन सकता है।"

बच्चों के लिए यह सिर्फ एक मीठा दिन नहीं था, बल्कि एक नई सोच का परिचय था। आठ साल की काव्या ने बताया, "पहली बार किसी बड़े आदमी ने स्कूल आकर हमें चॉकलेट दी और हमसे बात की।" रोहित की आँखों में चमक थी, "उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं बड़ा होकर क्या बनना चाहता हूँ। जब मैंने कहा 'डॉक्टर', तो उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई।" नौ साल की रश्मि ने बताया, "हमने उनके साथ एक ही थाली में मिठाई खाई। उन्होंने हमें कहानी भी सुनाई।" तन्वी ने अपने बस्ते से एक नया पेन और रंगों की डिब्बी दिखाते हुए कहा, "मुझे यह उपहार मिला है, और मैं इसका रोज़ ध्यान रखती हूँ।"

धीरे-धीरे यह परंपरा पूरे गाँव में फैल रही है। अब सिर्फ स्कूल ही नहीं, बल्कि पूरा गाँव इस उत्सव का हिस्सा बनना चाहता है। जब जन्मदिन निजी खुशी की बजाय सामाजिक जिम्मेदारी और प्रेरणा का प्रतीक बन जाए, तो समझ लीजिए कि शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं रही। चिंभर गाँव ने यही दिखाया है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) के 'विनोबा शिक्षक सहायक कार्यक्रम' के तहत महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ की ऐसी कई सरकारी स्कूलों और शिक्षकों को तकनीक और व्यवहारिक विज्ञान की मदद से बच्चों में जीवन कौशल विकसित करने के लिए सहायता भी दे रही है। OLF का 'विनोबा ऐप' शिक्षकों के शिक्षा विभाग से संबंधित दैनिक कार्यों को आसान और प्रभावी बनाने में मदद करता है।

जब गांव ने फिर से अपनाई 'अपनी' शाला

सांगवी (पुणे): जब भी स्कूल की याद आती है, तो सबसे पहले शिक्षक और साथी दोस्तों की छवियाँ मन में उभरती हैं। वही तो हैं, जिन्होंने हमें ज्ञान का सागर दिया और जीवन की सबसे मधुर यादें सौंपीं। कभी स्कूलों में बच्चों की चहचहाहट गूंजती थी, जो गालों पर मुस्कान ले आती थी लेकिन आज के समय में, अगर हमें अपने स्कूलों और उनमें पढ़ने वाले बच्चों की संख्या को बनाए रखना है, तो ठोस, रचनात्मक और जमीनी प्रयास करने ही होंगे। ऐसे ही प्रयासों की मिसाल है — "एक शिक्षक और उनके साथियों की शिक्षा की गुणवत्ता के लिए की गई सार्थक मेहनत की कहानी।"

बारामती के सांगवी गांव स्थित कम्बलेश्वर विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री ज्ञानदेव चीप सर ने 2018 में इस स्कूल की जिम्मेदारी संभाली। उस समय स्कूल में नामांकन घटकर मात्र 60 रह गया था और हाल ही में इसे अंग्रेज़ी माध्यम में परिवर्तित किया गया था।

चीप सर ने कुछ अलग करने की ठानी। उन्होंने गांव के प्रतिष्ठित कलाकारों और स्थानीय 'सेलिब्रिटीज़' — जैसे कि नाटक और टीवी में काम करने वाले परिवारों — के बच्चों को, जो निजी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में पढ़ते थे, अपने सरकारी स्कूल में लाने की योजना बनाई। वे स्वयं इन परिवारों से मिले, स्कूल का उद्देश्य, पाठ्यक्रम की गुणवत्ता और समग्र विकास की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को विस्तार से समझाया। इस ईमानदारी और दूरदृष्टि ने असर दिखाया — जैसे ही इन चर्चित परिवारों के बच्चों ने सरकारी स्कूल में दाखिला लिया, पूरे गांव में सकारात्मक हलचल मच गई।

इसके बाद सर ने विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धी अध्ययन की ओर प्रेरित करना शुरू किया। छोटी कक्षाओं में ही वे अभ्यास पुस्तिकाएं, ग्रुप क्विज़, पुरस्कार आधारित गतिविधियां और विशेष तैयारी सत्रों के माध्यम से बच्चों को इन परीक्षाओं के लिए तैयार करने लगे।

गर्मियों की छुट्टियों में, चीप सर और उनके शिक्षक साथी हर घर पहुंचे, केवल नामांकन के लिए नहीं, बल्कि अभिभावकों से खुलकर यह बात करने के लिए, कि स्कूल में उनकी भागीदारी कितनी महत्वपूर्ण है और उनके बच्चों को किस प्रकार की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता है। इस संवाद से विश्वास की एक मज़बूत डोर बंधी।

सिर्फ सोच नहीं बदली, स्कूल की सूरत भी बदली। उन्होंने स्कूल की दीवारों को सुंदर रंगों से सजाया, साफ-सुथरा परिसर बनाया, और बच्चों के लिए एक विशाल खेल का मैदान तैयार किया। कुछ ही हफ्तों में स्कूल का चेहरा ही बदल गया — और बच्चों और अभिभावकों के मन में गर्व की भावना लौट आई।

चीप सर ने शिक्षा में तकनीक के समावेश पर विशेष बल दिया। उन्होंने शिक्षकों को विनोबा ऐप और अन्य डिजिटल टूल्स के प्रयोग के लिए प्रशिक्षित किया और स्वयं भी उनमें सक्रिय भागीदारी निभाई। इससे न केवल छात्रों की सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनी, बल्कि अभिभावकों का विश्वास भी दोगुना हो गया।

कम्बलेश्वर स्कूल के शिक्षकों ने "छात्रों को अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा देने के लिए निजी स्कूलों में दाखिल करना ज़रूरी है" इस धारणा को तोड़कर एक महत्वपूर्ण कार्य कर दिखाया है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) 'आचार्य विनोबा भावे शिक्षक सहायक कार्यक्रम' के तहत महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ की सरकारी स्कूलों में शिक्षकों को लगातार सशक्त कर रही है। यह फाउंडेशन तकनीक और व्यवहारिक विज्ञान की मदद से शिक्षकों को बच्चों में कहानी सुनाने, अंग्रेजी बोलने, कविता पाठ और अन्य जीवन कौशल विकसित करने के लिए प्रेरित करती है। 'विनोबा ऐप' शिक्षकों के दैनिक प्रशासनिक कार्यों को भी आसान और प्रभावी बनाता है, जिससे वे अपना ज्यादा समय बच्चों की पढ़ाई पर केंद्रित कर पाते हैं।

इस महत्वपूर्ण पहल को आगे बढ़ाते हुए, OLF अब शिक्षा के क्षेत्र में एक और क्रांतिकारी कदम उठा रही है। Meta (पूर्व में फेसबुक) और Nudge Institute के साथ मिलकर, OLF एक ऐसा AI-आधारित समाधान तैयार कर रही है, जो शिक्षकों को 'सही स्तर पर शिक्षण' (Teaching at the Right Level) में मदद करेगा।

यह नई तकनीक शिक्षकों को कक्षा में छात्रों के सीखने के स्तर के अनुसार, विशेष वर्कशीट्स और गतिविधियां उपलब्ध कराएगी। खास बात यह है कि शिक्षक अपनी जरूरतें अपनी स्थानीय भाषा में, एक सरल इंटरफेस के माध्यम से बता पाएंगे। यह तकनीक दूर-दराज के ग्रामीण इलाकों के शिक्षकों के लिए शिक्षा को और भी सुलभ और प्रभावी बना देगी। इस तरह, OLF का यह नया प्रयास शिक्षकों को सिर्फ तकनीकी रूप से ही नहीं, बल्कि बच्चों की सीखने की ज़रूरतों को गहराई से समझने में भी मदद करेगा।

कविता

शेळ्या मेंढ्या वाटे लागे
येतो जवा वास
वासामधल्या सुगंधात
दिसतो माझा गाव

भोळे भाबडे लोक जवा
दिसती अनवाणी
माळरानी पाय त्यांचे
होते पानीपानी
पायामधल्या , पायामधल्या
खाचामध्ये लपे त्याची वाणी
तवा वाणीमधल्या अश्रूत
दिसतो माझा गाव

फाटका याचा संसार अन्
फाटकाच याचा सदरा
पोटासाठी पोरांनाही
रानोरान फेरा
लेकरांच्या, लेकरांच्या
शिक्षणाची नाही याला जाण
तवा त्याच्या अज्ञानात
दिसतो माझा गाव

पोटासाठी अन्न नाही
नाही शुद्ध पाणी
गावाभोवती केरकचरा
नाही आरोग्य गाणी
रोगराई, रोगराई
पसरंल याची नाही त्याला ठाव
तवा त्याच्या अंधश्रद्धेत
दिसतो माझा गाव

सौ.करुणा विजय गुरव,
जिला परिषद प्राथमिक शाला,
दोड्याल (जिला –सोलापूर)

दही का विज्ञान

रोजमर्रा के उदाहरणों से अधिगम आसान बनाती शिक्षिका

शिक्षिका : "दही कैसे बनता है?

एक छात्रा : दूध को गुनगुना करो, उसमें दो चम्मच दही डालो, और सुबह तक दही जम जाता है।"

शिक्षिका : गुनगुना क्यों करना पड़ता है?

छात्रा : ऐसे ही करते हैं हमेशा।

शिक्षिका : मैं बताती हूँ उसका विज्ञान। दूध एक विशिष्ट तापमान में आने के बाद, उसमें दही डालो तो दही वाले बैक्टीरिया सक्रिय हो जाते हैं। अगर ठंडे दूध में डालो तो वे बैक्टीरिया नहीं विकसित हो पाएंगे इसलिए उसे गुनगुना करना ज़रूरी है।

अब बताओ, रेफ्रिजरेटर में डीप फ्रीज़ हमेशा ऊपर ही क्यों रहता है? ...

नन्हे सपनों की ज्योत जगानी है
हर आंखों में रोशनी सजानी है
विज्ञान को केवल किताबों से ना बांधे
जीवन से जोड़कर नयी राह दिखानी है
शिक्षिका **श्रीमती अर्चना शर्मा**

यह है राजनांदगाँव ज़िले के माध्यमिक शाला देवादा में पढ़ाती विज्ञान शिक्षिका श्रीमती अर्चना शर्मा की कक्षा। बच्चों को विज्ञान की क्लास उबाऊ न लगे, इसके लिए वे रोज़मर्रा के उदाहरणों से समझाती हैं। इस तरह सिखने के बाद बच्चे कभी ये बातें नहीं भूलते।

अर्चना जी कहती हैं, "शिक्षक बनकर बच्चों में वैज्ञानिक सोच का विकास करना शुरू से ही मेरा सपना था। इसी जुनून ने मुझे B.Ed करने और विज्ञान विषय चुनने की प्रेरणा दी। विज्ञान में मेरा झुकाव इसलिए भी था क्योंकि इसमें तथ्यों के माध्यम से सच्चाई को समझाया जाता है।" सन 2009 से वह इसी विद्यालय में पूरी लगन से पढ़ा रही हैं। एक समय ऐसा भी आया जब बच्चों में पढ़ाई की रुचि कम हो रही थी। कभी लगता था कि उनकी बातों का असर ही नहीं हो रहा। फिर भी अर्चना जी ने कोशिशें जारी रखीं।

पूरी कहानी पढ़िये विनोबा ऐप पर

छात्रों की डिजिटल जादूगर शिक्षिका

संगीता जी ने ऑनलाइन वर्कशॉप्स के सहारे ऐसी शिक्षण सामग्री तैयार की जो ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजक भी हो

बोरी (दुर्ग): वह साल 2020 था जब आश्चर्यों और चुनौतियों का सामना करते हुए श्रीमती संगीता साहा ने छत्तीसगढ़ के छोटे से गांव बोरी धमधा के गवर्नमेंट इंग्लिश मीडियम स्कूल में अध्यापन की जिम्मेदारी संभाली। उस समय पूरी दुनिया एक अनजानी, अदृश्य महामारी की मार झेल रही थी। जीवन की हर गति थम गई थी।

शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा। स्कूल बंद थे, कक्षा के हँसते-मुस्कुराते बच्चे अपने घरों में कैद थे, और शिक्षा लग रही थी जैसे कहीं ठहर सी गई हो। पर अंधेरे के बीच रोशनी की तलाश भी तो होती है। सरकार ने ऑनलाइन शिक्षा को एक समाधान के तौर पर अपनाया और शिक्षा के प्रवाह को जारी रखने का संकल्प लिया।

शुरुवाती दिनों में बच्चों में ऑनलाइन पढ़ाई को लेकर भारी असहमति और उदासीनता थी। तकनीकी कठिनाइयाँ, संसाधनों की कमी और सबसे बड़ी बात—बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा में रुचि की कमी। जब संगीता जी ने पहली बार ऑनलाइन कक्षाएं शुरू कीं, तो कुछ ही बच्चे जुड़ पाए। अन्य स्कूलों के बच्चे भी ऑनलाइन कक्षाओं से जुड़ने को तैयार नहीं थे।

ऐसे समय में संगीता जी ने बड़ी मेहनत से ऑनलाइन वर्कशॉप और ट्रेनिंग सेंटर्स से जुड़कर ऑगमेंटेड रियॅलिटी और 3D इफेक्ट्स जैसे आधुनिक तकनीकी उपकरण सीखने की ठानी।

यह कोई आसान काम नहीं था। उन्होंने रात-दिन प्रयास किया, शोध किया और फिर ऐसी शिक्षण सामग्री तैयार की जो आंखों को भाए और मन को बांधे। प्रत्येक वीडियो में उन्होंने ज्ञान के साथ-साथ एक मनोरंजक और दिलचस्प पहलू जोड़ा। बच्चों को चुनौती दी, "इन वीडियो में छुपे सवालों के जवाब खोजो।" यह नयी विधि धीरे-धीरे जादू की तरह काम करने लगी और बच्चे एक-एक कर कक्षा में जुड़ने लगे। उनके इस अलग और प्रतिबद्ध प्रयास ने स्कूल में पूर्ण उपस्थिति सुनिश्चित की। यह साबित कर दिया कि चुनौती और बाधा दोनों को नई सोच और लगन से पार किया जा सकता है।

यह अलग सोच और कड़ी मेहनत रंग लाई। जहां अन्य स्कूलों के बच्चे ऑनलाइन कक्षाओं से जुड़े नहीं थे, संगीता जी की कक्षा में धीरे-धीरे सभी बच्चे जुड़ने लगे। इस नवाचार ने पूरे स्कूल में पूर्ण उपस्थिति सुनिश्चित की और साबित कर दिया कि चुनौतियों अवसरोंश्र बदला जा सकता है।

संगीता जी ने नृत्य, संगीत, चित्रकला, पपेट शो जैसी कलाएँभी ऑनलाइन माध्यम से प्रस्तुत किए, जिससे शिक्षा एक खेल और रचनात्मकता का आनंद बन गई। उनके प्रयासों ने बच्चों को सीखने के प्रति आत्मीयता और उत्साह दिया। उनके प्रयासों को नई ऊर्जा तब मिली जब उन्हें विनोबा ऐप से जुड़ने का अवसर मिला। वहाँ उन्होंने अपने वीडियो पूरे जिले के शिक्षकों के साथ साझा किए और सीखने के नये आयाम खोजे।

पूरी कहानी पढ़िये विनोबा ऐप पर

विनोबा के संग, शिक्षिका बनी प्रेरणा की मिसाल

शंकरनगर (रायपुर): छत्तीसगढ़ के गाँवों में पढ़ाना कभी केवल ज्ञान देने का काम नहीं था—वह एक एकाकी संघर्ष था। स्कूल की चारदीवारी के भीतर शिक्षक अकेले अपने बूते बच्चों की दुनिया सँवारने की कोशिश करते थे। न साथ काम करने वाला कोई, न सलाह-मशविरा करने की सुविधा। कोई नया प्रयोग करना हो, तो न साधन, न मंच।

ऐसे ही माहौल में शिक्षिका संगीता साहू जी, शंकर नगर, खम्हारदिह की प्राथमिक शाला में पढ़ा रही थीं। मन में उमंग थी, कुछ अलग करने की चाह भी थी, पर रास्ता नहीं सूझता था।

फिर एक दिन उनकी जिंदगी में विनोबा ऐप आया। वे कहती हैं, "जैसे किसी ठहरे हुए तालाब में नई धार बहने लगे—वैसा कुछ हुआ।" यह सिर्फ़ एक मोबाइल ऐप नहीं था, बल्कि एक शिक्षक के लिए एक साथी, एक मंच, एक खिड़की बन गया। संगीता जी को पहली बार यह अनुभव हुआ कि वह अकेली नहीं हैं। इस ऐप के ज़रिए वह न जाने कितने शिक्षकों से जुड़ गईं, जिनसे सीखना और बाँटना दोनों शुरू हुआ।

"जो-जो गतिविधियाँ अपने बच्चों के साथ करती थी, मैं विनोबा ऐप पर डालने लगी। धीरे-धीरे देखा कि और शिक्षक भी वैसा ही कर रहे थे, और हम सब एक-दूसरे से बहुत कुछ सीख रहे थे।"

उन्होंने अपने रोज़मर्रा के शिक्षण प्रयोग, जो अब तक उनके स्कूल की दीवारों तक ही सीमित थे, विनोबा ऐप पर साझा करने शुरू किए। बदले में उन्हें भी राज्य भर के शिक्षकों की सीख और विचारों का लाभ मिला।

लेकिन परिवर्तन यहीं नहीं रुका। इस तकनीकी माध्यम ने उनकी कक्षा का रूप ही बदल दिया। किताबों के पन्नों से बाहर निकलकर पढ़ाई अब कहानियों, खेलों और संवादों में ढल गई। बच्चों की आँखों में एक अलग ही चमक दिखाई देने लगी— सीखने की ललक, समझने की तड़प और खेलने-पढ़ने का आनंद।

"अब बच्चे मुझसे खुद पूछते हैं—'मैडम, आज क्या नया करेंगे?' यह सवाल ही मेरे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है," संगीता जी मुस्कुराते हुए कहती हैं।

अब यह स्कूल किसी एक गाँव की चुपचाप चलने वाली पाठशाला नहीं रही। यह एक चहल-पहल वाला नवाचार केंद्र बन गया है—जहाँ शिक्षक मिल-जुलकर विचार करते हैं, अनुभव साझा करते हैं और हर दिन कुछ नया करने की कोशिश करते हैं।

और इस पूरी कहानी की जड़ में है – विनोबा ऐप।

एक समय जो शिक्षिका अकेले अपने मन की बात लिए बैठी थीं, आज वे सैकड़ों शिक्षकों के लिए प्रेरणा बन गई हैं। विनोबा ऐप ने न सिर्फ़ संगीता जी जैसे शिक्षकों को साधन और साथ दिया, बल्कि छत्तीसगढ़ की शिक्षा व्यवस्था को भी एक नई दिशा दिखाई। ■

शिक्षा संदेश

रंगाई

- संदेश संजय थोरवे

रविवार का दिन था। दोपहर का खाना हो चुका था। वसुधा और उसके पिता आराम से बैठे थे। स्कूल की छुट्टी होने की वजह से वसुधा के चेहरे पर एक अलग ही उत्साह था।

वसुधा बोली,"पापा, कुछ मज़ेदार करें क्या?"

पापा ने पूछा,"क्या करें? मिट्टी कला, रंगाई, नक्काशी या कुछ और?"

" रंगाई!" वसुधा ख़ुशी से उत्साहित होते हुए बोली।

पापा ने कहा,"बहुत बढ़िया! मैं सामान लेकर आता हूँ। तब तक तुम सोचो कि कौन सा चित्र बनाना है?"

पापा सामान ले आए।

तभी वसुधा बोली,"पापा, पहाड़ बनाते हैं! याद है? जब हम गाँव गए थे, तब रास्ते में जो पहाड़ दिखा था, मैं वो बनाऊँगी!"

" अरे वाह! पिछले हफ़्ते मैं हिमालय में ट्रेकिंग के लिए गया था, मैं वहाँ का पहाड़ बनाता हूँ!" पापा ने कहा।

दोनों अपने-अपने कागज़ पर पहाड़ बनाने लगे। वसुधा ने एक बड़ा त्रिकोण बनाया, जो उसे याद आ रहे पहाड़ जैसा दिख रहा था। उस पर कुछ सीधी और

आड़ी रेखाएं खींचीं। उसे जो पहाड़ याद था, उसे कागज़ पर उतारने में उसे बहुत मज़ा आ रहा था। उसका हरा-भरा पहाड़ गहरे नीले रंग से भरा हुआ था।

वह उत्साह से पापा से बोली, "पापा, मेरा पहाड़ बन गया।"

पापा ने उसके चित्र को देखा और कहा,"कितना बढ़िया! मेरा अभी बाकी है। मेरे पास नीला रंग नहीं है। क्या तुम अपना नीला रंग दोगी?"

"यह लो पापा!" वसुधा ने तुरंत रंग आगे बढ़ा दिया। उसके बाद वह उत्सुकता से देखने लगी कि पापा क्या कर रहे हैं।

थोड़ी देर में पापा बोले, "यह देखो, मेरा भी पहाड़ पोतना तैयार हो गया।"

धीरे-धीरे रंग में खोए हुए बाप-बेटी की बातों को मज़ेदार मोड़ मिलने लगा। वसुधा ने पापा के चित्र को ध्यान से देखा और थोड़ी उलझन भरी आवाज़ में पूछा, " पापा, आपका आसमान कितना सुंदर दिख रहा है। लेकिन पहाड़ इतना सफ़ेद क्यों है?"

पापा ने कहा,"अरे, हिमालय में ऐसे ही पहाड़ होते हैं। वहाँ हमेशा बर्फ़ गिरती रहती है, इसलिए वे सफ़ेद दिखते हैं।"

वसुधा बोली,"मेरा पहाड़ ज़्यादा ही गहरा हरा हो गया है। मुझे हल्का हरा रंग इस्तेमाल करना चाहिए था।"

पापा ने प्यार से उसकी पीठ पर हाथ रखा और कहा,"रहने दो! रहने दो! यह पहाड़ भी बहुत अच्छा लग रहा है। मानो जैसे यह बारिश में पेड़ों के बीच छिपा हुआ है।"

यह अनुभव पापा ने अपने ऑस्ट्रेलिया में रहने वाले दोस्त आदेश टोके को सुनाया।

तब आदेश बोले, "ऑस्ट्रेलिया में बच्चों में बचपन से ही 'जीवन के अनुभव से जुड़ी शिक्षा' की नीति और 'स्व-अनुभव से सीखने' की ललक विकसित की जाती है। बच्चों के सीखने में माता-पिता का इस तरह घुल-मिल जाना कितना ज़रूरी है, यह मुझे आपके इस अनुभव से समझ आया।"

पापा बोले, " आदेश, तब मैंने अपनी बेटी की आँखों से दुनिया देखी और उसने मेरी आँखों से। सच्चे रंग कागज़ पर नहीं, बल्कि हमारी आँखों और अनुभवों में होते हैं। यही इस रंगाई का असली अर्थ है।" ■

'कॉफी विथ सीईओ' : शिक्षकों के लिए यादगार अनुभव

पुणे : "हमें कभी लगा ही नहीं था कि जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हमारे साथ इतने समय तक बैठकर बातचीत करेंगे। यह तीन घंटे की चर्चा हमारे जीवन की अविस्मरणीय घटना है। बनेगी।" – एक शिक्षक ने खुशी से कहा। उपस्थित अन्य शिक्षकों ने भी यही भावना जताई और इसे अपने जीवन का खास पल बताया।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) की पहल पर 'कॉफी विथ सीईओ' कार्यक्रम 16 सितंबर 2025 को पुणे जिला परिषद के यशवंतराव चव्हाण सभागृह में आयोजित हुआ। जिले से चुने गए 55 शिक्षकों ने इसमें भाग लिया। विनोबा ऐप का बेहतर उपयोग कर शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने वाले इन शिक्षकों को जिला प्रशासन से सीधे संवाद का अवसर मिला।

कार्यक्रम की अध्यक्षता पुणे जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गजानन पाटील (IAS) ने की। उन्होंने शिक्षकों के अनुभव, चुनौतियाँ और

सुझाव पूरे मन से सुने। इस अवसर पर उपमुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री श्रीकांत खरात, DIET प्राचार्य श्री नामदेव शेंडकर, शिक्षा अधिकारी श्री संजय नाइकड़े, उपशिक्षणाधिकारी श्री सुनील गच्चे, वरिष्ठ व्याख्याता सौ. वैषाली बच्छाव, OLF के संस्थापक व सीईओ श्री संजय डालमिया, वरिष्ठ सलाहकार श्री शंकर सर और श्रीमती दिव्या मैडम भी उपस्थित थे।

साथ ही श्री चंद्रकांत उघले, श्रीमती शेख (Deputy DEO) और सीईओ कार्यालय से नरेंद्र व श्रेया ने भी सक्रिय सहभाग किया।

इस चर्चा से शिक्षकों को न केवल नई प्रेरणा मिली, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के नए विचार भी सामने आए। 'कॉफी विथ सीईओ' ने शिक्षक और प्रशासन के बीच पुल बनकर शिक्षा क्षेत्र को नई दिशा देने का कार्य किया।

बोलेगा बचपन: सोनाली कुलकर्णी के संग कहानी और सृजन की बहार

"जब तक हम दिल से एक-दूसरे से जुड़ने की ख्वाहिश नहीं रखते, तब तक असली विकास कैसे होगा ?" इस सवाल के साथ सोनाली कुलकर्णी ने छत्तीसगढ़ के सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के साथ अपने संवाद की शुरुवात की। अवसर था ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) की ओर से आयोजित 'बोलेगा बचपन with सोनाली कुलकर्णी' इस ऑनलाइन सत्र का। अपने सहज और प्रेमपूर्ण अंदाज से सोनाली ने सभी के मन को छू लिया।

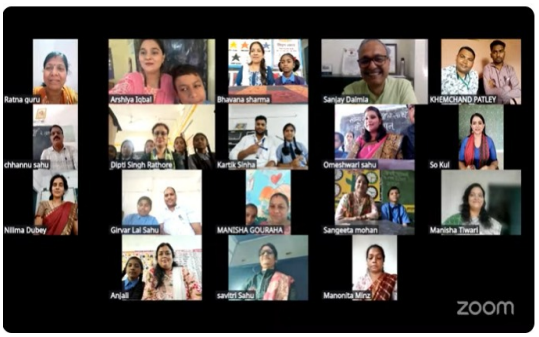

पहले OLF के संस्थापक एवं सीईओ संजय डालमिया ने सोनाली कुलकर्णी का औपचारिक परिचय कराया। सोनाली जी ने फिर अपने मृदुभाषी और आत्मीय स्वभाव से शिक्षकों और बच्चों के दिलों को जीत लिया। यह कार्यक्रम सरकारी स्कूलों के बच्चों को रचनात्मक लेखन और कथाकथन के गुण सिखाने की एक खूबसूरत पहल थी।

शिक्षकों ने बड़े रोचक सवाल पूछे— बच्चों का आत्मविश्वास कैसे बढ़ाएं? कैसे उनकी कहानियों में जान डालें? सोनाली जी ने बताया कि बच्चों को सुनना सबसे जरूरी है, क्योंकि हर बच्चे के मन में अनगिनत कहानियां होती हैं। कहानी को एक यात्रा समझो, जैसे सूरज उदय से अस्त तक चलता है, और उस सफर के हर मोड़ पर नए पात्र और घटनाएं जन्म लेती हैं।

एक प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा, "रायटिंग ब्लॉक आने पर उसे दिल पर न लें, क्योंकि यह पूरी प्रक्रिया का हिस्सा है। उस समय का सर्जनशीलता से उपयोग करें। वह समय भी निकल जाएगा, और फिर कहानी अपने आप बहने लगेगी।"

एक और पहलू पर बात करते हुए उन्होंने कहा, "बच्चों के मन में सपने जगाने के लिए प्रेरणादायक कहानियां, फ़िल्मी और खेल जगत के नायक उदाहरण बन सकते हैं। बच्चों को बताएँ कि कहानी सुनाते वक्त वे श्रोताओं से आंख मिलाकर बोलें, अपने हाव-भाव को सरल और सहज रखें, ज़रूरत से ज्यादा अभिनय न करें।"

कार्यक्रम में बच्चों ने भी दिल छू लेने वाली कहानियां सुनाईं। 'म्याऊँ म्याऊँ करने वाला तोता' की कथा ने सबको हँसा दिया। शिक्षकों ने भी रंग-बिरंगे व भावपूर्ण संवादों से कार्यक्रम को जीवंत बना दिया।

कार्यक्रम में ओपन लिंक्स फाउंडेशन की सह-संस्थापिका श्रीमती रीना डालमिया और टीम विनोबा मौजूद थी, जिन्होंने इस आयोजन को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई।

शिक्षक गदगद थे कि उन्हें OLF की वजह से एक सिलेब्रिटी से रूबरू होने का मौका मिला। उन्होंने ओपन लिंक्स फाउंडेशन का तहे दिल से धन्यवाद किया और एक एक कर अपनी भावना व्यक्त की। इस अपार स्नेह को देखकर सोनाली भी भावुक हो गईं। कार्यक्रम के दौरान अँकर विजय वावगे की सजीव और प्रभावशाली हिंदी प्रस्तुति ने हर किसी के चेहरे पर मुस्कान बिखेर दी।

बोलेगा बचपन के इस कार्यक्रम में सीख, मस्ती और अपनत्व हर रंग में बिखरा था, जिसने हर एक प्रतिभागी के दिलों को छूकर एक नई प्रेरणा दी। ■

कूट प्रश्न 15

रहस्यमयी थैला

आपके पास 3 थैले हैं:
1. एक में केवल सेब हैं
2. एक में केवल संतरे हैं
3. एक में दोनों फल थोड़े थोड़े हैं

अब तीनों थैलों पर लेबल गलत लगे हैं। आपने 'मिश्रित' लेबल बाले थैले से 1 फल निकाला और वह सेब निकला. क्या अब आप बता सकते हैं कि वह कौन-सा थैला है ?

सोचिए! सभी लेवल गलत हैं...

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन
बंगलो नं. 3, तात्या टोपे सोसायटी, शिवरकर गार्डन के सामने, पुणे-411040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापक: **रीना डालमिया**
संपादक: **अमोल मावकर**